छात्रों/शिक्षकों/छात्र संगठनों एवं बुद्धिजीवियों से निम्न बिन्दुओं पर सुझाव आमन्त्रित किये जाते है:
वार्षिक शैक्षिक कलैण्डर का अनुपालन किया जाना

छात्र हित में एवं शिक्षा के स्तर को बनाये रखने हेतु प्रत्येक वर्ष एक शैक्षिक कलैण्डर विश्वविद्यालय के सक्षम प्राधिकरणों (Competent Authorites) द्वारा सत्र आरम्भ होने से पूर्व घोषित किया जाता है। उक्त कलैण्डर में विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत् एवं प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिये प्रवेशार्थ आवेदन की तिथि/अन्तिम तिथि, शिक्षण कार्य आरम्भ/पूरे होने की अन्तिम तिथि, शिक्षण कार्य–दिवस, सेमिस्टर परीक्षाओं की तिथि/अवधि, वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन जिसमें परीक्षा आरम्भ होने से समाप्त होने तक की तिथियों का उल्लेख होता है तथा परीक्षा परिणाम घोषित किये जाने की तिथियों/अवधि का विवरण अंकित होता है। उक्त शैक्षिक कलैण्डर के अनुरूप विभिन्न परिस्थितियों में कार्य सम्पादित न हो पाने के कारण न केवल शैक्षिक सत्र पिछड़ जाता है बल्कि परीक्षा परिणाम भी विलम्ब से घोषित हो पाते हैं जिसके दुष्परिणाम यह होते हैं कि छात्र अगले सत्र में प्रवेश देर से ले पाते हैं और जो छात्र स्नातक (तृतीय वर्ष) की परीक्षा में सम्मिलित होते हैं वे स्नातकोत्तर स्तर पर विलम्ब से प्रवेश ले पाते हैं और जो छात्र स्नातक उपाधि के आधार पर किसी प्रतियोगात्मक परीक्षा (Competitive Examination) में प्रतिभाग करना चाहते हैं, परीक्षा परिणाम विलम्ब से घोषित होने के कारण वे ऐसी प्रतियोगात्मक परीक्षा में सम्मिलित होने से वंचित रह जाते हैं जिसके कारण उनके भविष्य (Career) में रूकावट आती है।

शैक्षिक कलैण्डर के अनुरूप समयबद्ध तरीक से कार्यवाही पूरी न होने के अन्य कारणों के साथ साथ निम्न कारण हैं:–

1 समस्त संकायों (faculties) के अन्तर्गत स्नातक परीक्षाओं के तृतीय वर्ष की परीक्षाओं के प्रश्नपत्र/विषयों में विषमताएं (Anomalies) होना/अन्य विश्वविद्यालयों की तरह इस विश्वविद्यालय में स्नातक (तृतीय वर्ष) की परीक्षाओं में दो विषयों की परीक्षा न होकर तीन/चार विषयों की परीक्षा होती है जिसके कारण मूल्यांकन में भी समय अधिक लगता है और परीक्षा परिणाम विलम्ब से घोषित हो पाता है। बी0एससी0, बी0कॉम0 तथा बी0एससी0 की तृतीय खण्ड की परीक्षाओं में एक–एक विषय कम करके उक्त समस्या का समाधान किया जा सकता हैं। **इस सन्दर्भ में आपके सुझाव आमंत्रित हैं**

2 बी0ए0 तथा बी0एससी0 स्तर पर कतिपय समान विषयों के पूर्णाको तथा प्राप्तांक में एकरूपता नहीं है। ऐसे विषयों में बी0ए0 स्तर पर उसके पूर्णाक 35 है जबकि बी0एससी0 स्तर पर उसी विषय के पूर्णाक 75 हैं। इसमें एकरूपता लाकर समस्या का समाधान हो सकता है ताकि परीक्षा परिणाम विलम्बित न हो। **इस सन्दर्भ में भी आपके सुझाव आमंत्रित हैं।**

3 अनिवार्य विषय, राष्ट्रीय गौरव, शारीरिक शिक्षा एवं पर्यावरण के पश्नपत्रों को प्रत्येक विद्यार्थी को स्नातक स्तर के तीनों वर्षों में पूरा किया जाना अनिवार्य है। इन परीक्षाओं के अंक उनके कुलयोग में सम्मिलित नहीं होते हैं परन्तु उक्त परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना अनिवार्य है। यदि किसी प्रश्नपत्र की परीक्षा उत्तीर्ण नहीं की जाती है तो उस छात्र का परिणाम अन्तिम रूप से घोषित नहीं होता है। कभी–कभी छात्र औपबन्धिक रूप से (Provisionally) स्नात्तकोत्तर की परीक्षा में प्रवेश प्राप्त कर लेते है परन्तु अपनी स्नातक स्तर की परीक्षा का परिणाम अन्तिम रूप से घोषित कराने हेतु उन्हें उक्त प्रश्नपत्रों की परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना ही पड़ता है। उक्त समस्या का समाधान "राष्ट्रीय गौरव" तथा "पर्यावरण अध्ययन" को मिलाकर एक प्रश्नपत्र में बदलने तथा शारीरिक शिक्षा विषय को स्नातक स्तर पर एक वैकल्पिक विषय के रूप में परिवर्तित कर किया जा सकता है। **इस सन्दर्भ में आपके सुझाव आमंत्रित हैं।**

4 पुनः परीक्षा (Re-Exam) साधारणतया अगले वर्ष की वार्षिक परीक्षा के साथ आयोजित की जाती है जिसके परिणाम स्वरूप छात्र का एक वर्ष नष्ट हो जाता है। पुनः परीक्षा का यदि उसी वर्ष अगस्त/सितम्बर माह मे आयोजित कर परीक्षा परिणाम घोषित कर दिया जाता है तो एक वर्ष बचाया जा सकता है। **इस सन्दर्भ में आपके सुझाव आमंत्रित है।**